तटबंध से बाढ़ नियंत्रण की सीमाएं

भारत डोगरा

बिहार में कोसी नदी की प्रलयंकारी बाढ़ ने एक बार फिर इस ओर ध्यान खींचा है कि तटबंध आधारित बाढ़ नियंत्रण की कितनी सीमाएं हैं व कई बार इससे कितनी कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं। भारत जैसे कई देशों में तटबंध बाढ़ नियंत्रण का मुख्य आधार रहे हैं।

आज़ादी के बाद भारत में लगभग 40,000 कि.मी. तटबंधों का निर्माण किया गया है। तटबंधों से जुड़ी समस्याएं कई देशों में उपस्थित हुईं हैं। सबसे अधिक समस्याएं अधिक गाद-मिट्टी और मलबा लाने वाली नदियों व उन नदियों में उत्पन्न होती हैं जो प्रायः अपनी राह बदलती रहती हैं। इन नदियों को तटबंधों से बांधना बहुत कठिन होता है। जब यह प्रयास किया जाता है तो कई बार बहुत प्रतिकूल असर सामने आते हैं, जैसा कि हाल ही में कोसी की प्रलयंकारी बाढ़ में नज़र आया है।

जब नदी को तटबंधों से बांधा जाता है तो नदी द्वारा लाई गई मिट्टी-गाद खेतों व अन्य बड़े मैदानी क्षेत्रों में फैलने की बजाय तटबंधों के भीतर ही सिमटकर रह जाती है। इस कारण प्रति वर्ष तटबंध के भीतर नदी का पेंदा ऊपर उठता है और जल-स्तर बढ़ जाता है। कुछ वर्षों के बाद जल स्तर तटबंध की ऊंचाई तक पहुंच जाता है जिससे तटबंध द्वारा दी गई सुरक्षा बेकार हो जाती है। यह सही है कि थोड़ा-बहुत धन खर्च करके इस तटबंध को ऊंचा किया जा सकता है मगर कुछ वर्षों बाद नदी का जल-स्तर यहां तक भी पहुंच सकता है।

तटबंध कुछ क्षेत्र की बाढ़ समस्या कम करते हैं तो कुछ क्षेत्रों की बाढ़ या दलदलीकरण की समस्या बढ़ा भी सकते हैं। विशेषकर दो तटबंधों के बीच रहने वाले लोगों की जिंदगी तो बुरी तरह तबाह हो सकती है। प्रायः उनके संतोषजनक पुनर्वास की व्यवस्था भी नहीं होती है।

तटबंध एक ओर बाढ़ रोकते हैं तो दूसरी ओर, बाहरी पानी को नदी में मिलने से रोकते भी हैं। इस तरह रुके हुए पानी से कई जगह दलदलीकरण व बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है व कुछ खतरनाक बीमारियां फैलने का खतरा भी पैदा होता है। जहां दो या अधिक नदियां मिलती हैं, वहां भी तटबंध नई दिक्कतें उत्पन्न करते हैं।

कई बार तटबंध टूट भी जाते हैं। हर वर्ष ही तटबंधों के टूटने के समाचार मिलते रहते हैं। प्रायः देखा गया है कि तटबंधों के टूटने से जो बाढ़ आती है वह अधिक विनाशकारी होती है व उसका वेग अधिक होता है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में हुए कुछ सम्मेलनों में कई गांववासियों ने बताया है कि तटबंध बनाने के बाद उनके गांव की स्थिति पहले से कहीं अधिक बिगड़ गई है। इन गांवों से उठ रही आवाज़ को ध्यान से सुनना चाहिए व यह समझ बनाने का प्रयास बहुत गंभीरता से करना चाहिए कि किन स्थितियों में तटबंध उपयोगी रहे हैं।

(स्रोत फीचर्स)